अध्याय : 7

स मा प न

अध्याय : 7

स मा प न

रघुवीर सहाय हिन्दी साहित्य के नयी कविता के दूसरा सप्तक के नये कवि के रूप में पहचाने जाते हैं। रघुवीर जितने सफल व्यंग्य कवि हैं, उतने ही वह एक समर्थ संवेदनशील कवि के रूप में नयी कविता में अवतीर्ण हुए हैं। उनकी कविताओं में मानवतावाद निखर आया है, उतना या उनसे ज्यादा उनका कवि का रूप सम-सामाजिक चेतना के कवि के रूप में प्रकट हुआ है।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से दूसरा सप्तक के कवि रघुवीरजी और उनके काव्य की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों को लक्ष्य बनाकर अपनी बात कहीं गई हैं। सुविधानुसार यह समस्त अध्ययन सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रारंभ में रघुवीरजी का जीवनवृत्त तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी मिलेगी। रघुवीर सहाय नये कवि हैं। नयी कविता में उनका योगदान अतुलनीय रहा है। साहित्य एक अनुभूति है। जीवन का दूसरा नाम गति है। यह गति समाज का संचलन करती है जब समाज गतिशील होता है तब उसके पूर्व साहित्य की गति तीव्र होती है। सफल क्रांति पहले साहित्य की विचारधारा में होती है। समाज का रूपाकार तो बाद में बदलता है। कवि समाज में डूबकर जीवन को देखता है, वह जीवन की पूर्णता में अपने आपको मिलाकर उसके साथ रागात्मक संबंध स्थापित करता है। जीवन एक निरपेक्ष साहित्य है।

रघुवीर सहाय की कविता जन-सामान्य के दुःख-दर्द और पीड़ा की छटपटाहट की कविता है। रघुवीरजी की कविता स्वातंत्र्योत्तर लोक-जीवन की त्रासदी

की सफल अभिव्यंजना है। रघुवीरजी की कविता में सरसता, कोमलता एवं संगितात्मकता सहज गेयता का प्राधान्य है, इसका परिचय मैंने इसमें चित्रित किया है।

रघुवीर सहायजी का जीवन-काल सामान्य रहा है। लेकिन उनका व्यक्तित्व सच्चे सोने के मुताबित विकसित होता गया है। उनकी कविताओं में आस्था एवं टूटन की विचारधारा मिलती है। उनकी कविता के अलावा कुछ निबंध, अनुवाद तथा कहानियों का योगदान रहा है।

उनकी कविता सामान्य मानव की कविता है तो दूसरी तरफ आधुनिकता को लेकर उभरी है "सीढ़ियों पर धूप में" से लेकर "लोग भूल गए हैं" तक उनकी कविता का विकास पाया जाता है। उन सब कविताओं का सामान्य परिचय इसमें मैंने संकलित किया है।

उसके बाद रघुवीरजी के मानवतावादी कवि के दर्शन मिलते हैं। कवि अपनी भूमि, अपने परिवेश, अपने समाज, अपने राष्ट्र से कटकर, हटकर मात्र कल्पना जगत् में ही नहीं रह सका, उसे यथार्थ की भूमि पर उतरना पडा ही है। व्यक्ति, परिवेश, समाज, राष्ट्र की सुख-दुःखात्मक अनुभूतियों को उसे स्वर देना पड़ता है। युग के विभिन्न संदर्भों की उसे गति देनी पड़ती है।

कवि रघुवीर सहाय ने मानवतावाद को प्रस्तुत करते वक्त मानवतावाद के आड आनेवाली चीजों पर बड़ा जोर से प्रहार किया है। संस्कृति के बदलते मूल्यों में मानवता के अनेक प्रकार के भाव कवि रघुवीर सहाय की कविताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यक्तिवाद को उकसाने वाली एक शक्ति अतृप्त वासना है, उसकी पूर्ति के लिए आज का मानव व्यस्त पाया जाता है, इसके दर्शन भी इसमें मिलते हैं। मानव की प्रवृत्तियाँ तथा वैयक्तिकता का स्वरूप तथा उसकी सामाजिकता का साद्यंत रूप संकलित किया है। रघुवीरजी ने अपनी समस्त कविताओं में मानवतावादी स्वरूप को किस प्रकार प्रकट किया है, उसका परामर्श इसमें चित्रित हुआ है।

जीवन के अनेक नवीन क्षेत्र के परिधि के भीतर खींचकर रघुवीरजी ने सफलता पायी है। अपरिचित बाहय एवं आंतरिक जीवन की अभिव्यक्ति को उन्होंने उभारा है। समाज में दरार पडी थी, वह धीरे-धीरे टूटने लगी थी, वह वैयक्तिक एवं सामूहिक स्तरों पर निराश और कुंठित है। आज का आदमी क्रूर बन गया है, आदमी चीज बन गया है। आदमी अमानवीयकृत बना दिया गया है। आदमी आदमी को खा रहा है। इसलिए आदमी पर से आदमी का विश्वास उठ गया है। व्यक्ति समाज का प्रमुख घटक होता है वह समाज को गति और जीवन देता है, उसका समर्थन मैंने इसमें रेखांकित किया है। मानवविषयक धारणा के स्वरूप का आकलन इसमें पाया गया है।

तद्नंतर रघुवीरजी के संवेदनशील का परिचय मिलता है। इसमें विरह की पीड़ा के विविध भाव-प्रणव का सुलभ चित्रण किया गया है। मानवीय मूल्यों का भाव इनकी कविताओं में मिलता है। उनका नया रूप, नयी कविता अपनी एक अलग ही पहचान करवा देती है। मध्यम-वर्गीय समाज के यथार्थ चित्रण करने में कवि ने भूल नहीं की है। नागरीकरण तथा आधुनिक सभ्यता के भाव प्रणव का चित्रण की भरमार इनकी कोवता में पायी जाती है। इनकी कविता में सामाजिक यथार्थ के प्रति जागरूकता तथा वैज्ञानिक तरीके से समाज को समझने की प्रवृत्ति दिखाई देती है और यही इनके काव्य-विषयक दृष्टिकोन की विशेषता है।

रघुवीरजी ने मानव के एकाकी, असमर्थ, भयकातर, निराशा एवं पराजित रूप तथा भाव को स्वीकार करने के स्थान पर उसकी असीमित सहनशक्ति, अपराजित आस्था एवं पर-दुःख कातरता को विशेष रूप से इसमें रेखांकित किया है। अतः रघुवीरजी ने असुंदर से सुंदर तथा अभद्रता से भद्रता ढूँढने के लिए जो प्रयत्न किया है, वह आधुनिक बोध का ही पहलू है। आज की सभ्यता का तकाजा यह है कि आदमी स्वास्थ्य के लिए अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए दूसरों की जिंदगी से खेलता है, आदि भावों के विविध पहलू मैंने अंकित किये हैं।

उसके वाद राजनीतिक कवि के रूप में रघुवीरजी का व्यक्तित्व उभर कर आया है। रघुवीरजी ने वैविध्य सभ्यता की नकाब ओढ़े समाज, डरावने जीवन, जीवनव्यापी शून्यता और संत्रस्त जिंदगी को विविध पहलुओं से देखा है। इसी राजनीति में यौन, कुंठा, स्त्री-पुरूष के कलुषित संदर्भ, व्यक्ति पीड़ा की आलंबन बनाकर नयी कविता में आगे बढ़ी है। कवि रघुवीरजी ने युगीन शासन व्यवस्था को निकट से देखा है और उसके "पारदर्शी" चित्र प्रस्तुत किये हैं। कवि ने भारत की बदलती राजनीति का यथा तत्थ्यांकन अपने काव्य में किया है। भारतीय राजनीति की विसंगतियों पर भी कवि ने लेखनी चलायी है। रघुवीर की काव्यगत विशेषता के कारण इनका काव्य यथार्थ का साक्षात्कार माना जाता है।

कवि रघुवीर सहाय ने राजनीति की विशेषताओं को उद्‌घाटित किया है। आज के नेता जनसामान्य की पीडाओं पर, उनके कष्टों पर, उन पर आयी दैवी आपत्तियों पर झूठे आँसू बहाते हैं और आपत्तियों की आग पर अपनी रोटी सेंकते हैं। इन नेताओं के आदर्श खोखले हैं, चरित्र भ्रष्ट है। इसप्रकार के भावावेश के कारण उनके काव्य में काव्यात्मक स्फूर्ति है। उनका काव्य आधुनिक चेतना का संवाहक है। उनके काव्य में यथार्थता के चित्रण मिलते हैं। इसका सफल चित्रण प्रस्तुत किया है।

तद्‌नंतर रघुवीरजी का तीखी और सीधी चोट करने वाले व्यंग्यकार का रूप दृष्टिगोचर होता है। रघुवीरजी ने अनुशासन पर्व के अंतर्गत राजनीति के इतिहास पर जो काला धब्बा था, उसे संगठित शक्ति का उद्‌घोष इसमें चित्रित किया है और आधुनिक युग की नकली शांति पर भी व्यंग्य कसा है। कुछ तौर पर आर्थिक विडबनाओं एवं विसंगतियों पर करारा व्यंग्य पेश किया है। रघुवीरजी की कविताओं में विद्रोह और व्यंग्य की प्रवृत्ति पायी जाती है।

रघुवीरजी की कविता में समकालीन धाराओं से जहाँ चिंतन के क्षेत्र में अलगाव था, वही लघुमानव और सर्व जतीन भाषा की अवहेलना वही थी, एक व्यंग्य की व्यापकता भी उनमें थी। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सबसे बड़ा शत्रु साम्यवाद

है, जिसमें साहित्यकार को राजनीतिज्ञों के इशारों पर नाचना पड़ता है, इसलिए रघुवीरजी ने अपने व्यंग्य का लक्ष्य समाज को बनाया है तथा सशक्त माध्यम से रसानुभूति का परिचय दिया है।

व्यंग्यशीलता एक प्रमुख विशेषता तथा गुण के रूप में चित्रण रघुवीरजी ने अपनी कविताओं में किया है। व्यंग्य काव्य की सीमाओं का चित्रण भी किया है। लोकतंत्र का आधार व्यंग्य ही है, यह उदाहरणों द्वारा समझाया है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा भ्रष्टाचारी व्यंग्यों को बहुतेरे मिसालों के साथ समर्थन किया है। टूटन की क्रिया रघुवीरजी ने अपीन कविता में अनुभव व्यंग्य की पहचान बनकर उभरी हुई है। शोषण के चक्र और नेताओं के भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले व्यंग्य इसमें चित्रित किये हैं।

उसके बाद रघुवीरजी के काव्य-सौष्ठव का परिचय दिया है। रघुवीरजी की सबसे बड़ी विशेषता एवं उपलब्धि भाषा के क्षेत्र में है। रघुवीरजी ने भाषा को रूढ़ियों से मुक्त कर सीधी, सपाट एवं नंगी भाषा को अपनाया है। रघुवीरजी ने अकृत्रिम और रोजमर्रा की भाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी जनभाषा ही साहित्यिक भाषा बनी है। उन्होंने भाषा को सिद्धि नहीं साधन माना है।

रघुवीरजी ने बिम्ब और भाषा के सकल, सहज और जीवन्त रूप को अपनाया है। नयी कविता के द्वारा बिम्ब ग्रहण के माध्यम से जिन नवीन उपकरणों का चयन किया गया है उनका विवेचन इसमें है। बिंब योजनाओं के प्रति विशेषाग्रह तथा बिम्ब के महत्व में रघुवीरजी की वैचारिक धारणाओं का उल्लेख है। रघुवीरजी ने उपमानों की नवीनता के लिए जिन मौलिक बिम्ब और नवीन उपकरणों को अपनी कविता में स्थान दिया है इसका अंकन इस प्रकरण में मैंने किया है।

अभिव्यंजना की भाषा संबंधी नवीन शब्दों की तोड़-मोड़, आंचलिक, ग्रामीण, देशज शब्दों की सन्निहिनी, विदेशी तथा दूसरी भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों को ग्रहण करने की उदारता, मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग आदि का समावेश इसमें बड़ी सफलता के साथ किया है।

अतः नई कविता में हिन्दी काव्य को जो बौद्धिक और सामाजिक चेतना रघुवीरजी ने प्रदान की है और कविता को जन-समाज के निकट लाने का प्रयास किया है। रघुवीरजी के साहित्य में एक ओर कविता का नया रूप है और दूसरी ओर प्राचीनता की दुरूहता भी पायी जाती है। उनकी विविध रूपों की पहचान हिन्दी साहित्य में अनंत काल तक याद देती रहेगी।

निष्कर्षतः यह कहना उचित है कि नयी कविता के नए कवि रघुवीर सहायजी के काव्य में कविता की संपूर्णता को पहचानने की ठोस एवं कारगर पहल है। कवि ने भविष्य को एक नए रूप में परिवर्तित करने का ठोस प्रयास किया है। रघुवीर सहायजी ने आधुनिक हिन्दी कविता को एक नया संदर्भ तथा रूढियों से विद्रोह की चेतना प्रदान की है और कविता को जनमानस के निकट लाने का यथोचित प्रयास किया है।

रघुवीर सहायजी का काव्य मानवतावादी दृष्टिकोन का परिचायक है। उनके काव्य में संवेदनशीलता कूट-कूटकर भरी है। राजनीतिक समस्याओं का हल करते हुए भारतीय राजनीति पर उन्होंने प्रखर प्रकाश डालकर आधुनिक नेताओं पर व्यंग्य कसा है। शिल्पविधान की प्रौढता की दृष्टि से रघुवीर सहायजी का काव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

रघुवीर सहाय के काव्य का मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। उनके कविता के मूल्यबोध का विस्तृत विश्लेषण नहीं के बराबर है। इसी वजह से मेरी बौद्धिकता के अनुसार मैंने इस लघु-शोध-प्रबंध में आपके प्रमुख और उल्लेखनीय कविता-संग्रहों का मूल्यांकन करने का अल्पसा प्रयास किया है।